**जयति जय, जय सद्गुरु महाराज ।**
**छके युगल रस रास सरस जनु, मूर्तिमान रसजाज ।**
**बिनु कारण करुणाकर जाकर, अस स्वभाव भल भ्राज ।**
**बरबस पतितन देत प्रेमरस, अस रसिकन सरताज ।**
**डूबत आपु डुबावत जन कहँ, प्रेमसिंधु-ब्रजराज ।**
**हौं 'कृपालु' गुरु-चरण शरण गहि, भयो धन्य जग आज ।**

भावार्थ-

**गुरुदेव की जय हो, जय हो ।**
प्रेमानन्द में निमग्न गुरुदेव श्यामा श्याम के मूर्तिमान रसावतार ही हैं । उनका सहज स्वभाव ही है अकारण करुणा करके जीवोद्धार करना । गुरुदेव ऐसे रसिक शिरोमणि हैं कि पतितों को भी हठात् प्रेमानन्द प्रदान कर देते हैं उस रस में स्वयं भी डूब जाते हैं साथ ही शरणागत शिष्य को भी डूबा देते हैं । **'कृपालु'** कहते हैं मैं तो उन सद्गुरु के चरणों की शरण ग्रहण करके आज धन्य हो गया ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिशत्